उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग,

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार–249404

01334-244143

01334-244282 (F)

18001804143 (Toll Free)

संः 194/01/डी0आर0/सेवा–1/2012–13 **दिनॉक 01 अक्टूबर, 2014**

विज्ञप्ति

उत्तराखण्ड शासन के आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग के अन्तर्गत ऋषिकुल/गुरुकुल राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, हरिद्वार में विभिन्न विषयों के प्रवक्ता पदों हेतु सीधी भर्ती के रिक्त 23 पदों पर दिनॉक 08.03.2013 को प्रकाशित विज्ञापन के क्रम में रिक्त पदों के सापेक्ष स्क्रीनिंग परीक्षा का आयोजन किया जाना है। इस सम्बन्ध में प्रश्नगत् पद हेतु होने वाली स्क्रीनिंग परीक्षा का पाठ्यक्रम निम्नवत् है –

प्रवक्ता आयुर्वेद कॉलेजों के पदों पर स्क्रीनिंग (वस्तुनिष्ठ) परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम

समय अवधि : 02 घण्टे

कुल प्रश्न : 100 (प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का) **पूर्णांक : 100**

1. पदार्थ विज्ञान

दर्शनों की संख्या, दर्शन का अर्थ, भारतीय दर्शन का सिद्धान्त षडदर्शन आयुर्वेद से सम्बद्ध दर्शन, पदार्थ विज्ञान उपयोगिता, भाव पदार्थ, अभाव पदार्थ।

द्रव्य विज्ञानीय, गुणविज्ञानीय, कर्म विज्ञानीय, सामान्य विज्ञानीय, विशेष विज्ञानीय, समवाय विज्ञानीय, अभाव विज्ञान का विस्तृत ज्ञान, भारतीय दर्शन एवं आयुर्वेद के विभिन्न प्रमाण निरूपण, कार्य कारण भाव निरूपण, सृष्टि उत्पत्ति निरूपण।**(05 अंक)**

2. आयुर्वेद का इतिहास

वैदिक काल निर्धारण, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद में आयुर्वेद, आयुर्वेदावतरण, संहिता काल, संहिता प्रवर्तक आचार्य, प्रतिसंस्कार कर्ता आचार्य, संग्रहकाल ग्रंथ संग्राहकाचार्य, रसशास्त्र का उद्भव काल, तथा विकास क्रम आयुर्वेद की सार्वभौमिकता, एलोपैथी के जनक पर आयुर्वेद का प्रभाव, आयुर्वेद का गौरवमय वैशिष्ट, वृहत्रयी, लघुत्रयी स्वंतन्त्रता के बाद आयुर्वेद का विकास, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद, केन्द्रीय अनुसंधान परिषद, भेषज संहिता परिषद (फार्माकोपिया कमेटी), वैद्यों के संगठन आयुर्वेदीय पत्र पत्रिका का प्रकाशन, विश्व स्वास्थय संगठन। **(02 अंक)**

3. अष्टांग संग्रह (सूत्र स्थान) अध्याय 1 से 40 तक। (05 अंक)

4. रचना शरीर

शरीर सम्बन्धी सिद्धान्त, शरीरोपक्रम शारीर शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का परिचय, अभिनिवृत्ति शारीर, गर्भ शारीर, प्रमाण शारीर, अस्थि शारीर, सन्धि शारीर, सिरा धमनी स्रोतस शारीर, लसिका संस्थान, पेशी शारीर, कोष्ठ शारीर, ग्रन्थि शारीर, कला शारीर त्वक् शारीर, उत्मांगीय तांत्रिका संस्थान, तंत्र शारीर, मर्म शारीर अंगरेखांकन शारीर, इन्द्रिय विज्ञान शारीर। **(06 अंक)**

5. क्रिया शारीर

आयुर्वेदीय क्रिया–शारीर सम्बद्ध सिद्धान्त विवेचन, शारीर शब्द की व्याख्या, पर्यायवाची, धातुभेद से पुरूष संख्या, दोष, धातु, उपधातु, मल सम्बन्धी ज्ञान, देह प्रकृति, प्रकृति परीक्षण का विस्तृत ज्ञान। प्राणवायु, प्राणवह स्रोतस, श्वसनपथ, कृत्रिम श्वसन कर्म, प्राणायमगत वायु, स्रोतसगत विशिष्ट वायु, उदान वायु, व्यान वायु, स्वर यंत्र, वागुत्पत्ति, व्यान वायु के विशिष्ट कर्म, शरीरस्य पोषण, आहार द्रव्य, उनके घटक तथा गुण कर्म, आहार परिणामकर भाव, दन्त जिह्वा, लाला ग्रन्थि महास्रोतस, पाक क्रिया उससे सम्बन्धित अंगो तथा उनकी क्रिया का वर्णन, आहार पाक, यकृत क्रिया का वर्णन, रसादि धातु की उत्पत्ति, धातु पाक (चयापचय क्रिया) अग्न्याशय, प्लीहा की क्रिया का वर्णन। सप्त धातुओं ओजस, का वर्णन, पुरीष मूत्र, आहार मल, स्वेंद की

उत्पत्ति स्थान, वृक्क, वस्ति, मूत्रवह स्रोतस का वर्णन, क्रिया का वर्णन, ज्ञानेद्रियॉ, कर्मेद्रियॉ का वर्णन, स्वतंत्र परतंत्र तंत्रिका तंत्र, षटचक्र, मन, आत्मा, ज्ञानोत्पत्ति कारण, निद्रा, स्वप्नोत्पत्ति, मानोवह स्रोतस, मानस दोष, शारीरिक दोष के परस्पर सम्बन्ध, शरीर क्रियात्मक मनोविज्ञान, ग्रन्थि संस्थान, अन्तःस्रावी ग्रन्थि वर्णनम् प्रभा वर्णनम्, क्षय वृद्धि लक्षणानी, पर्यावरण सापेक्ष, क्रियाशारीराध्यन। **(06 अंक)**

6. चरक संहिता – सम्पूर्ण। (06 अंक)

7. स्वस्थवृत्त

व्यक्तिगत स्वास्थय, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, सदवृत्त, रोगानुत्पादन, वायु,भूमि निवासनाय, गृह, पाकशाला, शौचालय आदि, जल के प्रकार, जल परीक्षा, प्रकाश, सूर्य रश्मि, अपद्रव्य, शौच स्थान, शवविनाशन, औद्योगिक संस्थान में स्वास्थ्य संरक्षण, विद्यालय स्थान, स्वास्थ्य नाशक विभिन्न व्यवसाय का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, जनपदोध्वंस, चिकित्सालय भवन, परिवार कल्याण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कार्यक्रम, मातृ शिशु कल्याण कार्यक्रम, कृमि विकार, दूषित वायु व्याधियाँ, आहार, प्राथमिक स्वास्थ्य, संरक्षण, विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वास्थ्य प्रशासन, स्वास्थ्य विषयक सांख्यकी। योग हठ योग, राज योग, मोक्ष के लक्षण, स्वास्थ्य संरक्षण में योग का महत्व योगासन, जनपदोंध्वंस, संक्रामक रोग। **(07 अंक)**

8.द्रव्य गुण विज्ञान

द्रव्य गुणशास्त्र परिभाषा, सप्तपदार्थ, द्रव्य, गुण, रस, विपाक, वीर्य, प्रभाव, कर्म, औद्भिदगण, द्रव्य नामकरण का आधार, प्रशस्त भेषज प्रयोग,शोधन, कृत्रिम द्रव्य ज्ञान, द्रव्य गुणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास। 119 द्रव्यों की तालिका के अनुसार विशद ज्ञान, 195 द्रव्यों का तालिका के अनुसार सामान्य ज्ञान। जान्तव द्रव्य, भौम द्रव्य अन्नपानोपयोगी द्रव्यों का परिचय, गुण कर्म का ज्ञान, सल्फाड्रग्स एन्टीवायटिक्स, जीवनीय (विटामिन) द्रव्यों का गुण कर्म विवेचन। **(07 अंक)**

9. रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना

01. रस, परिभाषा प्रकरण, यन्त्राणि, मूषा, कोष्ठी, पुटाः, विद्युतभ्राष्ट्री
02. कज्जली विवेचन
03. महारस विवेचन
04. धातूपधातु विवेचन
05. रत्नोपरत्न विवेचन
06. विषोपविष विवेचन
07. भैषज्य कल्पना इतिहास, क्रमिक विकास, भैषज्य कल्पना के आधारभूत सिद्धान्त
08. भैषज्य कल्पना निर्माण में प्रयुज्यमान यन्त्रों का परिचय,
09. प्राच्य एवं पाश्चात्य मानों का ज्ञान, प्राच्य और पाश्चात्य की दृष्टि से मानों की तुलनात्मक समीक्षा। शुष्क आर्द्र द्रव्यों के ग्रहण का नियम, औषध कल्पना संरक्षण – परीक्षणविधि, विविध कल्पना सवीर्यतावधि।
10. निम्नांकित औषध कल्पनाओं का परिचय, निर्माण ज्ञान, मात्रा एवं आमयिक प्रयोग ज्ञान :– अयसस्कृति, अर्क अवलेह इत्र, उदक आदि।
11. उष्णोदक औषधयूष, औषध सिद्धपानीय औषधसिद्धमासंरस–कल्क–क्वाथ–क्षार–क्षीर–पाक खरलीय रस, गुग्गुल कल्पना गुटिका, चक्रिका चूर्ण– तैलपातन धूपन–धूमपान–प्रमथ्या फाण्ट–मलहर मसी–मण्डूरकल्पना अन्यलवणकल्पना, लाक्षारसकल्पना, लौहकल्पना, वर्तिकल्पना, सत्वकल्पना–स्वरस–हिम–शीतकषाय।
12. स्नेह पाक कल्पना विधान, जात्यातिघृत–ब्राह्मीघृत–नारायणतैल, पंचगुणतैल निर्माण और उपयोग।
13. सन्धान कल्पना विधान, अर्जूनारिष्ट–अशोकरिष्ट–तक्रारिष्ट दशमूलारिष्ट–द्राक्षारिष्ट आरविन्दासव चन्दनासव निर्माण उपयोग मात्रा।
14. पथ्य कल्पना, लेपभेदों का निर्माण व प्रयोगविधि शतधौत–सहस्रधौतघृत निर्माण व प्रयोग विधि, मलहर, सिक्थतैल निर्माण विधि।
15. द्राव अञ्जन, आश्च्योतन–विडालक–तर्पण'–पुटपाकादि कल्प, गण्डूष –कवल मंजनकल्प –नस्य प्रधमन–धूम्रपान निर्माण प्रयोग ज्ञान।
16. निम्नांकित औषधियों का निर्माण व उपयोग :– च्यवनप्राश, वासावलेह, व्याघ्रीहरीतकी, तालीसादिचूर्ण, भास्कर लवणचूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, हिंग्वष्टक चूर्ण–आनन्दभैरवरस, आरोग्य वर्द्धिनी–कर्पूररस–कस्तुरीभैरवरसकुमारकल्याणरस,गर्भपातरस–चन्द्रप्रभाररस–चन्द्रामृतरस– प्रतापलंकेश्वररस, प्रवालपंचामृत, त्रिभुवनकीर्तिरस–योगेन्द्ररस रसकर्पूर–राजमृगांक– रामबाणरस– लक्ष्मीविलासरस रस–बसन्त कुसुमाकर–वातकुलान्तक –वृहदवातचिन्तामणिरस– शंखवटी, श्वास कुठाररस, सूतशेखररस, हिंगुलेश्वर रस, हेमगर्भपोट्टली, हृदयार्णवरस, लशुनादिवटी, चित्रवादिकटी, लवंगादिवटी, संजीवनी, कैशोर गुग्गुल, योगराजगुग्गुल, सिंहनादगुग्गुल, चन्दनादि लौह, नवायसलौह, सर्वज्वरहर लौह, सप्तामृतरस। **(07 अंक)**

10. रोग निदान एवं विकृति विज्ञान

01. निदान की निरूक्ति परिभाषा, महत्व
02. दोषों के चय प्रकोपादि का कारण
03. दोष, धातु, मल के क्षय, वृद्धि के लक्षण

04. दोष, धातु, मल का रोग उत्पत्ति में कारण, षट क्रिया काल
05. तीन रोग मार्ग
06. स्रोतस विज्ञान
07. स्रोतस दुष्टि के कारण, लक्षण
08. स्रोतसो के विकार, हेतु लक्षण
09. व्याधि और दोषों का कार्य कारण सम्बन्ध दोषों के लक्षण, व्याधि के लक्षण।
10. नानात्मज, सामान्यज व्याधियाँ।
11. व्याधि के आश्रय
12. व्याधि के प्रकार आगन्तुज, शारीर, मानस भेद से, आदिबल प्रवृत्ति भेद से, अनुबन्ध अनुबंध्य भेद से, स्वतंत्र परतंत्र भेद से
13. रोग का निदानार्थकरत्व, व्याधिसंकरत्व
14. आठ महागद
15. रोग एवं रोगी परीक्षा सिद्धान्त
16. रोगी परीक्षा की विधियाँ
17. विविध परीक्षा (प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश) प्रमाण के अनुसार
18. पंचविधि, षड्विधि रोगी परीक्षा
19. विविध परीक्षा (दर्शन, स्पर्शन, प्रश्न)
20. अष्ट विधि रोगी परीक्षा (नाड़ी मूत्रादि)
21. दस विधि परीक्षा (प्रकृति, विकृति आदि)
22. तेरह स्रोतस परीक्षा, षड़ंग परीक्षा सहित
23. विकृति विज्ञान की परिभाषा महत्व
24. आयुर्वेदीय विकृति विज्ञान की विशिष्टता
25. दोष, धातु, मलो का वैषम्य
26. दोष दूष्य सम्मूर्च्छना
27. प्रकृति समसमवेत, विकृति विषम समवेत भेद से विकृति का वर्गीकरण।
28. ''सभी रोग मन्दाग्नि के कारण होते है।'' इस सिद्धान्त का विवेचन। आम का रूप विवेचन उसकी विकृति का कारकत्व।
29. साम, निराम दोष लक्षण
30. सामनिराम दूष्य लक्षण
31. साम निराम मल के लक्षण
32. ओज विज्ञान, व्याधिक्षमत्व
33. ओज की विकृतियाँ (ओज व्यापद, ओज विस्रन्स, ओज क्षय)
34. पंच निदान का महत्व, विवेचन
35. पूर्वरूप का लक्षण, महत्व एवं सामान्य विशेष भेद।
36. रूप का लक्षण, महत्व, पर्याय, भेद
37. उपशय, अनुपशय का लक्षण, महत्व एवं प्रकार
38. सम्प्राप्ति का लक्षण महत्व, भेद
39. आवरण विज्ञान, आशय और अपकर्ष

40. उपद्रव लक्षण
41. अरिष्ट विज्ञान
42. व्याधि की साध्यासाध्यता विचार
43. बीज, बीज दुष्टि उसके द्वारा जनित रोग
44. अधोलिखित रोगो का सामान्य परिचय और उनकी वैकारिकी :–
(क) शोथ (ख) शोफ(ग) कोथ (घ) अपजनन (ड.) पूति उत्पादन (च) रक्त स्कन्दन (छ) प्रवाहगत रक्तस्कन्दन (ज) जराजन्य व्याधि

45. अन्त : स्रावी ग्रन्थियों का परिचय और उनके रोग (चयापचय जन्य विकृतियाँ)
46. पर्यावरण प्रदोषज विकार
47. जनपदोध्वंस व्याधियाँ
48. संसर्गज, औपसर्गिक रोगों का परिचय।
49. विभिन्न रोगाणु का परिचय, रोग उत्पादन में उनका महत्व
50. अधोलिखित परीक्षा के सामान्य परिचय और उपयोग
(क) क्ष किरण परीक्षा (ख) सूक्ष्म ध्वनि परीक्षा (ग) हृद् विद्युत रेखांकन (घ) मस्तिष्क क्रिया विद्युत रेखांकन (ड.) जैव रासायनकी परीक्षा (च) सूक्ष्मजीवीय परीक्षा

51. निम्न स्रोतसोगत व्याधियों का सविस्तार वर्णन :–
(क) मनोवह स्रोतस यथा :–भ्रम, विभ्रम, मद, मूर्च्छा, सन्यास, अपस्मार, उन्माद, अतत्वामिभिवेश

(ख) वातवह स्रोतस :– आक्षेपक, अपतंत्रक, अर्दित, पक्षाघात, अधरांगघात, गृध्रसी आदि।

(ग) अन्नवह स्रोतस :– अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरूचि, छर्दि विसूचिका, विलम्बिका, आनाह आध्यान, आटोप, अम्लपित्त, परिणाम शूल, शूल ग्रहणी, संग्रहणी, उदर रोग।

(घ) उदक वह स्रोतस :– तृष्णा, दाह, जलाल्पता, जलक्षय।

(ड.) रसवह स्रोतस :– ज्वर, ज्वर भेद, रस क्षय आदि।

(च) रक्तवह स्रोतस :– पाण्डु, कामला–कुम्म कमला, हलीमक, रक्त पित्त, वात रक्त, क्रोष्टुकशीर्ष, शीत पित्त, उदर्द, कोठ, शीतला, मसूरिका, रोमान्तिका, यकृत विकार, प्लीहा विकार स्नायुक,श्लीपद, रक्तभाराधिक्य, न्यूनरक्त भार, रक्तकण विकृति आदि।

52. अधोलिखित स्रोतसगत व्याधियों का सविस्तार वर्णन :–
(क) प्राणवह स्रोतस :– स्वरभेद, कास, श्वास, हिस्का, राजयक्ष्मा, हृदय रोग, हृच्छूल, हृदयविस्फार, हृदयाघात, उरः क्षत, उरःतोय आदि।

(ख) मूत्रवह स्रोतस :– मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, उष्णवात, अश्मरी, फिरंग, उपदंश, ग्रन्थिवृद्धि, आदि।

(ग) पुरीषवह स्रोतस :– अतिसार, प्रवाहिका, विवन्ध, अर्श भगन्दर, कृमिरोग आदि।

(घ) मांसवह स्रोतस :– शोष, ग्रन्थि मांसार्बुद आदि।

(च) मेदोवह स्रोतस :– स्थौल्य, कार्श्य, प्रमेह, मधुमेह आदि।

(छ) अस्थिवह स्रोतस :– संधिवात, मन्याग्रह कटिग्रह, त्रिक्ग्रह, अस्थिक्षय आदि।

(ज) त्वक्गत व्याधियाँ :– कुष्ठ, विसर्प, कक्षा (दुष्टचर्म) विचर्चिका, कण्डू, पामा (खसरा) आदि।

(झ) जीवनीय द्रव्य हीनता :– व्याधिक्षमता जनित रोग, वृद्धि, ह्रास विकार, एड्स

(ट) उसर्गजन्य व्याधियाँ। **(07 अंक)**

11. अगदतन्त्र व्यवहारायुर्वेद एवं विधिवैधक

अगदतन्त्र निरूक्ति, विष–परिभाषा, विषयोनि, विषप्रकार, विषपरीक्षण, विषदाता के लक्षण, विषाक्तभोजन के लक्षण, शंकाविष, विषकन्या, प्राचीनकाल में सामरिक विषप्रयोग व उसका प्रतिकार। उपविष, दूषीविष, गरविष, विष के दस लक्षण, विष–गुण, विष व ओज गुण में भेद, विषवेग, वेग लक्षण व चिकित्सा, विविध स्थावर विष, कृत्रिम विष, विष के सामान्य चिकित्सा उपक्रम, मद्यविष, मदात्यत्य लक्षण व चिकित्सा, जांगम विष–सर्प, वृश्चिक, लूता, मूषक, अलर्क विषलक्षण व चिकित्सा।

उपविष–कुपीलु, भल्लातक, अहिफेन, जयपाल, धत्तूर, भंगा, अर्क, स्नुही, कलिहारी, गुंजा, अश्वमार विष लक्षण व चिकित्सा। खनिज विष, पारद, नाग, वंग, गिरिपाषाण, ताम्रदि विष लक्षण व चिकित्सा।

आहार विष वर्णन, विरूद्ध द्रव्यसेवन, आहार विष सामान्य चिकित्सा, शवच्छेद में दृश्यमान विष लक्षण। व्यवहार आयुर्वेद, न्यायालय तथा तत्परक विवेचन, पुलिस–समीक्षा, शपथ, चिकित्सक के साक्ष्य, चिकित्सक के प्रमाण–पत्र मृत्युकालीन लिखित एवं मौखिक साक्षी विषयक अभिप्राय और उनके नियम, आयुविवेक व आयु निर्णय, मृत्यु और उसके व्यहारायुर्वेदीय पक्ष व प्रकार, मृत्युत्तर–संकोच, मृत्युकाल निर्णय, अभिघात प्रकार तथा व्यवहारायुर्वेद की दृष्टि से परीक्षण, व्यभिचार तथा अप्राकृतिक कर्म, गर्भपात, भ्रूणहत्या, नपुंसकता, बन्ध्यत्व, कौमार्य का आयुर्वेदीय परिज्ञान, उन्मादरत का व्यवहारयुर्वेदीय विवेचन, चिकित्सक का कर्तव्य, आचार, नियम, व्यावसायिक अधिकार तथा गोपनीयता।

धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष ही आयुर्वेद का परम प्रयोजन, अधर्म ही सर्वथा रोग का कारक है, कायिक– वाचिक– मानसिक भेद से पाप के प्रकार। **(07 अंक)**

12. काय चिकित्सा

01. कायचिकित्सा शब्द निरूक्ति पर्याय एवं परिभाषा।
02. क्रियाकाल का दोषात्मक महत्व, व्याधिक्षत्व, चिकित्सा सहायक अंगो का ज्ञान।
03. दोष, धातु मल एवं ओज की वृद्धि एवं क्षय की चिकित्सा, विभिन्न चिकित्सा सिद्धान्त।
04. विविध एवंषडः विध चिकित्सा उपक्रम।
05. चरक चिकित्सानुसार ज्वर सम्प्राप्ति।
06. विभिन्न प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा।
07. विश्व स्वास्थ्य संगठन के तत्वाधातु में राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न रोगों की आयुर्वेदीय सम्प्राप्ति एवं चिकित्सा।
08. विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियो के चिकित्सा सिद्धान्तों का परिचय।
09. अन्नवह स्रोतस जन्य व्याधियों एवं उनकी चिकित्सा। इसी प्रकार मूत्रवह स्रोतस, प्राणवह स्रोतस, रस वह स्रोतस, में दो वह स्रोतस, त्वगत रोग एवं उनकी चिकित्सा।
सन्तर्पण–अपतर्पण जन्य व्याधियॉ तथा उनका चिकित्सा सूत्र।

यौन संक्रमित रोग एवं उनकी चिकित्सा।

वात व्याधि एवं उनकी चिकित्सा एवं चिकित्सा सूत्र।

10. विभिन्न अतः स्रावी ग्रन्थि जन्य व्याधि एवं उपचार।
11. आनुवांशिकीय व्याधियॉ,पर्यावरण जन्य, व्याधिक्षमत्व, चिकित्सक प्रेरित तत्व, दोष प्रकार, परामर्श तथा प्रतिकार, खाद्य विषाक्त प्रकार एवं प्रतिकार, गुरूधातु जन्य विषाक्ता प्रकार एवं प्रतिकार यात्रा जनित विकार एवं प्रतिकार, वातावरण परिवर्तन जन्य विकार, दंशजनित विकार, व्याधिक्षमत्व विकृतिजन्य विकार, सीरम जनित विकार, औषध अनूर्जताजन्य विकार,चिकित्सक प्रेरित विकारों का सामान्य परिचय एवं प्रतिकार।
12. क्षुद रोग।
13. मानस रोग।
14. वार्धक्य रोग विकार।
15. आत्ययिक रोग।
16. शोधन– पूर्णकर्म
17. प्रधान कर्म (वमन, विरेचन, बस्ति, शिरोविरेचन)
18. पश्चात् कर्म (संसर्जन क्रम)
19. रसायन
20. वाजीकरण **(07 अंक)**

13. शल्य तंत्र

01. धन्वन्तरि, सुश्रुत आदि आचार्यो के मतानुसार शल्य तंत्र एवं शल्य मान्यताएं।
02. निज आगन्तुज व्याधियॉ, उपसर्ग एवं निर्जीवीकरण, शल्य गृह का स्वरूप एवं उपचार।
03. यन्त्र उपयन्त्र, शस्त्र अनुशस्त्र का विस्तृत ज्ञान।
04. पिन्फु प्लोत, कवलिका, शोधन रोपण द्रव्य, योग्या विधि, प्रवेशिका विधि।
05. शल्य तंत्र में रक्त की विशेषता, रक्त स्तम्भन विचार, रक्ताधान, ब्लडग्रुप।
06. श्रृंग, अलाबु, जलौका का ज्ञान।
07. शल्य कर्म, सन्धान कर्म।
08. संज्ञाहरण
09. एक्स रे, सोनोग्राफी, कैटस्कैन, एम0 आर0 आई0।
10. विधि वैधक में शल्य तंत्र की उपयोगिता एवं शल्यक के कर्तव्य ।
11. शल्यक वृत्ति।
12. व्रण, व्रण शोथ परीक्षा।
13. आगन्तुज व्रण, सद्यो व्रण
14. अर्बुद के प्रकार, निदान एवं चिकित्सा।
15. मानस विकार।
16. स्नायु विकार
17. त्वक् विकार
18. धमनी विकार
19. सिरा विकार
20. मन्या विकार
21. विभिन्न प्रकार के भग्न
22. सन्धिमोक्ष।
23. सन्धिविकृति।
24. उरोभाग विकार।
25. उदर विकार
26. अन्ननलिका विकार
27. आमाशय विकार
28. क्षुद्रान्त्र विकार, बृहदान्त्र विकार, उण्डुक पुच्छ शोथ, गुद विकार, सहज गुद विकृति।
29. यकृत विकृति (विकार)
30. पित्ताशय विकार
31. अग्याशय विकृति
32. प्लीहा विकृति
33. वृक्क विकार,
34. गवीनी विकार
35. वस्ति विकार
36. मेढ्र विकार
37. वृषण विकार

38. आन्त्र च्युति आदि रोगों का विस्तुत ज्ञान एवं शल्य उपचार। **(07 अंक)**

14. शालाक्य तंत्र

शालाक्य तंत्र की शब्द व्युत्पत्ति, परिचय एवं इतिवृत्त तथा नेत्रशारीर।

निम्नरोगों का विस्तृत ज्ञानः–

01. नेत्र रोग
(i) सन्धिगत रोग (ii) वर्त्मगत रोग (iii) शुक्लगत रोग (iv) कृष्णगत रोग (v) तारामण्डल रोग (vi) दृष्टिगत रोग (vii) वर्त्म रोग (viii) क्रिया कल्प

02. शिरोरोग
03. कर्णरोग
04. नासारोग
05. मुखरोगः– ओष्ठ रोग, दन्त रोग, दन्तमूलगत, जिह्वागत, तालुगत, कण्ढगत, सर्वसर, लालास्रावी ग्रन्थियाँ, सन्धानकर्म तथा
06. क्रिया कल्प **(07 अंक)**

15. प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग

01. प्रसूति तंत्र की व्याख्या, स्त्री शरीर विज्ञान, रजो विज्ञान गर्भ विवरण, गर्भिणी विज्ञान, गर्भिणी की मुख्य व्याधियाँ, प्रसव विज्ञान, प्रसव व्यापद्, सूतिका विज्ञान, सूतिका रोग।
02. रक्त विद्रधि
03. स्तन–स्तन्य विज्ञान
04. मातृ शिशु कल्याण
05. परिवार नियोजन
06. स्त्री जननांग का जन्मजात विकार, अनार्तव, अल्पार्तव, कष्टार्तव, श्वेत प्रदर, स्त्री जननांग–भ्रंश, जननांग वृद्धि, ग्रन्थि, अर्वुद
07. वन्ध्यत्व
08. स्तन विद्रधि, गन्थि
09. विभिन्न व्याधियों में पंचकर्म
10. गर्भपालन विधायि शल्यकर्म, मूलाधार छेदन, उदर पाटन, योनिमूलाधार सीवन, कृत्रिम प्रसव–प्रेरण, गर्भाशय मुख विस्तारीकरण एवं दहन, गर्भाशय योनि भ्रंश, का उपचार, अर्स, ग्रन्थि, अर्वुद निर्हरण एवं दहन,

11. शल्य कर्म प्रयोजन एवं शल्य कर्म जन्य उपद्रव के उपचार।
12. परिवार कल्याण। **(07 अंक)**

16. कौमार भृत्य

01. कौमार भृत्य का विस्तृत ज्ञान एवं परिचय :– सद्योजात शिशु व नवजातशिशु तथा जातमात्र शिशु की परिचर्या। कुमारागार, नालोच्छेदन एवं उपचार, उल्वादि विशोधन, सम्यक्जात्, प्राक सम्यक्जात, पश्चात सम्यकजात। नवजात शिशु की परीक्षा, आयु परीक्षा, रक्षोघ्न कर्म नवजात शिशु पोषण, लेहन एवं स्वर्ण प्राशन।
02. स्तन्य पान, वयोभेद आहार विशेष ज्ञान।
03. धात्री परीक्षा एवं स्तन्य सम्पद्।
04. बालक परिचर्या :– कक्ष, क्रीणास्थल, बाल क्रीणनक, बाल विकास एवं वृद्धि, संस्कार।
05. दन्तोपत्ति, दन्तसम्पद् तथा सम्बन्धित व्याधियॉ।
06. बालरोग परीक्षण विधि, बाल सत्व परीक्षाण, बुद्धि, इन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय परीक्षा, बाल सत्व परीक्षा।
07. बाल रसायन, व्याधिक्षमत्व, टीकाकरण, मातृ स्वास्थ्य।
08. कौमारभृत्य सम्बन्धी विभिन राष्ट्रीय कार्यक्रम, पोषण सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।
09. शिशु में प्राण प्रत्यागमन के उपाय,बाल रोग निदान विधियॉ, सामान्य बाल चिकित्सा सिद्धान्त, पचंकर्म, प्रसव काल में आघातजउपद्रव जैसे गर्भ आघात, श्वासारोग उल्वक, भग्नादि रोग।
10. सहज व्याधियॉ :– हृदय जन्य विकार, जलशीर्षक, मातुलुंगक्षय, ओष्ठभेद, तालु विकृति, कर्णपालि विकृति, सन्निरूद्ध गुद, अनुवांशिक विकार, स्तन्य असात्म्य जन्य व्याधियॉ, कुपोषण व्याधियॉ,आगन्तुज व्याधियॉ, बालकों की सामान्य व्याधियॉ।
11. बाल व्यवहार व्याधियॉ
12. औषध सेवन जन्य विकृतियॉ।
13. ज्वर, अतिसार, वमनादि में जलाभावपूर्ति।
14. आक्षेपादि रोग। **(07 अंक)**

Syllabus for Screening (Objective) Exam of Lecturer Ayurveda

Time Allowed: 02 Hours

No. of Questions– 100 (Each Question of 1 Mark) **MM : 100**

(1) Padarth Vijnana

01- Meaning of Darshan & their numbers, principles of Indian Philosophy, Sada-darshan, darshan related to ayurveda, Importance of padarth vijnana. Bhava & abhava Padarth.
02- Dravya vijnana, Guna vijnana, Karma Vijnana, Samanya vijnana, Vishesha Vijnana & samvaya Vijnana description in detail.
03- Detail description of pramana (Epistemology) in Indian philosophy & in Ayurveda,
04- Karyakaranabhava & strishtiutpatti description in detail. **(05 Marks)**

(2) History of Ayurveda

Determination of vedic age, ayurveda in Brahamana, Aaranyaka- upnishada, origin of Ayurveda, samhita kala(Era), Authors of samhitas, Pratisanskarta Acharyas, Complilation age of samhita, commentators & their periods, origin of Ras-shastra, its progress. Globalisation of Ayurveda, Acceptance of Ayurved by Hippocrate & Yamana. Brihadtrayee &Laghutrayee, Progress in the field of Ayurveda after independence of India, CCIM, CCRAS, Pharmacopia Committee, organization of vaidyas, Publication of Ayuarveda Magazines and articles, WHO & Ayurveda. **(02 Marks)**

(3) Ashtanga Sangraha

Study of sutra sthan chapter 1-40 **(05 Marks)**

(4) Rachna Sharira

Description of principles regarding sharira., Shario-pakarma, Knowledge of terminologies used in sharira, Abhinivrite sharira (Development Anotomy) Garbha Sharira (Embryology), Pramana sharira, Asthi Sharira, Sandhi Sharira, Sira-Dhamni, srotas sharira (Angiology) , Lasika sansthan (Lymphatic system), Peshi sharira, Kala sharira, Twaka sharira (Dermatology), uttamangiya- tantrika samsthan (C.N.S) sharira, Tantra Sharira, Marma sharira, Anga rekhankan sharira (surface Anatomy) Indriya Vigyan sharira. **(06 Marks)**

(5) Kriya sharira

Detailed description of principles of Ayurvediya Kriya Sharira- explanation of term ‘Sharira’ & its synonyms, types of Purusha according to dhatu-bheda, Dosha-Dhatu, Mala & updhatu relted

description, Deha- prakriti & Manas-prakriti & their examination, Pranavayu, Pranavah-srotas, respiratory tract, artificial respiration, pranayamagata Vayu & Avashishta Vayu, udan Vayu, & specific function of Vyana Vayu, Nutrition of the body, different types of food materials according to Panchamahabhutas, & their property & functions, factors influencing digestion. digestion of food by teeth, tongue & salivary glands. Digestion in Mahasrotasa & description of physiology of its related organs & process of Ahara paka kriya, physiology of yakrita (Liver). Production of Rasadi dhatu, Dhatupaka (Metapolic process), Agnyashaya (Pancreas), Pleeha (spleen).

Description of sapta Dhatu & ojas, upadhatu, ahara mala & Dhatu mala, formation place and functions of mutra, purisha & swedadi mala. Physiology of mutravaha srotasa (Kidney-urinarybladder) Detailed description of Gyanendriya & karmendriyas central & antonomic nervous system, Ida, Pingala, Sata-chakra, Manas & Atma, causes of Gynotpatti, Nidra, swapnotpatti & Doshas of Manavahasrotas. Mutual relation of Manas & sharira Doshas & their influence, Physiological Psychology. Granthi sansthan description of endocrive gland, Study of Enviromental effeets on human physiology.

(06 Marks)

(6) Charak Sanhita - Complete **(06 Marks)**

(7) Swastha Vritta

Personal hygiene, Dincharya, Ratricharya, Ritucharya., Sadavritta, Roganupadaka factors, Vayu, Bhumi, Jala, Pareeksha, Prakasha, Ap-Dravya (waste material), Saucha sthana, Disposal of Dead body, methods of protecting health in industries, & Different professions, which have adverse effect on the health, School premices, Janapadodhwansa & sankramak Roga (Epidemies & infectious diseases. Hospital Building, family welfare programmes, National programmes, Mother & Child welfare programme, insect borne diseases, Air borne diseases, Aharvidhi (Diet regimen) Primary Health Protection, W.H.O, Health administration. Health & Medical Statistics. yoga, Hathayoga, Rajyoga, characteristic of Moksha, importance & usefulness of yoga far the maintenance of health. classification of yogasnas & their importance. **(07 Marks)**

(8) Dravya-guna vigyana

Lakshna of Dravyaguna shastra, Detailed introduction of sapta Padartha. Dravya, Rasa, guna, Virya, Vipaka, prabhava & karma, Audbhida Ganas, Basis of nomenclature of Dravyas, prasasta Bheshaja,

Pryoga marga & their purifiecation, knowledge of adultrants and artificial drugs. brief history of Dravya shastra.

According to C.C.I.M syllabus detail study of 119 dravyas & general knowledge 195 dravyas introduction of 12 Jantava (Animal products Dravyas, minerals, Introduction, knowledge of guna karma of Annapana Vargas. Actions & uses of Various modern drvgs like sulpha drugs, antibiotics, Vitamius etc. knowledge of their andverse effect & their management. **(07 Marks)**

(9) RASSHASTRA AND BHAISAJYA KALPNA

01- Deriviatin of 'RAS' word, definition by various acharya. Yantras and their uses, Moosha (Crucible), Koshthi, Puta, electric furuace.
02- Kajjali description
03- Maha Rasa description
04- Dhatu-updhatu description
05- Ratna-upratva description
06- Vish-upvish description
07- Deriviation, history and gradual development of Bhaisajya kalpna, fundamental principles of Bhaisajya Kalpna
08- Introduction and general knowledge of useful instruments for medicine preparation
09- Comparative study of Mann (measurement) in ancient and western use. Rules for taking dry and wet drugs. Collection and preservation methods of different aushadhi kalpanas, examinatin methods of different kalpanas, Potancy period.
10- Introduction, definition, prepration methods, doses and their uses.
11- Ushnodak aushadh use, aushadh sidh paniya (medicated water) non-veg soup, Kalk, Kwatha, Ksheer-pak, Ksheer-kalpna, Kharliya ras, guggala kalpna, gutika, chakrika, churna, tail-pattan, dhoopan, dhumra paan, pramathya, phant, ointment, massi, mandoor kalpna, lavva kalpna, laksha ras kalpna, loha-kalpana, Vartika kalpna, satva kalpana, swarashima, sheet kashaya.
12- Methods of sneha pak, preparation and uses of Jatyadi gharit, brahmi gharit, narayan tail, panchguna tail.
13- Features of sandhaa kalpna e.g., arjunarisht, ashokarisht, takra risht, dusmoolarisht, draksharisht, arwinda-aswa, chandana-aswa. Their preparation, properties, doses, uses and mode of administration.
14- Pathya kalpna, type of leapas, their preparation and application, Shata dhouta and sahastra dhout ghrita. Their preparation and application Sahastra dhout ghrita-preparation and administration. Method of preparation of malahara, Siktha taila.
15- Drava, Anjana, Ashchyoutaxna, Vidalaka, Tarpana, Putapak etc. Their medicinal preparation. Method of prepartion, properties and uses of nasya-pradhamana and dhumpana.
16- Method of preparation and therapeutic uses of following drugs-chyavana prashavleha, Vasavaleha, Vyaghri Haritaki, Talisadi Churna, Bhaskara lavana churna, Sitopaladi Churna, Hinguwashtaka Churana, Ananda Bhairava Rasa, Arogyavasdhini Gutika, Karpura Rasa, Kasturi Bhairava Rasa, Kumarakalyana Rasa, Garbhapala Rasa, Chandraprabha Gutika, Chandramrita Rasa, Pratapalankeshwara Rasa, Pravala Panchawrita Rasa, Tribhuvanakiriti Rasa, Yogendra Rasa, Raskarpura, Rajmriganka, Ramabana Rasa, Laxmivilasa Rasa, Basantakusumakara, Vatakulantaka, Brihat Vata Chintamani Rasa, Hinguleswara Rasa, Hemagasbhapottali,

Hridyarnava Rasa, Shladivati, Chitrakadi gutika, Rasonadivati, Lavangadi Vati, SnjivaniVati, Kaishora Guggulu, Yogaraja Guggulus, Simhanada Guggulu, Chandanodi Louha, Navayasa Louha, Sarvajwarhara Louha, Saptamrita Louha etc. **(07 Marks)**

(10) ROGANIDAN & VIKRITIVIJNAN

01- Importance of Nidana, is derivation & defination.
02- Causes for chaya and prakopa of dhatu.
03- Signs & Symptoms of Vriddhi (increase) and kshaya (depletion) of doshas, dhatus and malas.
04- Doshas, Dhatus and malas.as causative factors in the production of disease. Detailed description of Shatakriyakala.
05- Traya roga marga.
06- Knowledge of Srotasas.
07- Etiology & clinical features of sroto dushti.
08- Disorders of different srotasas, their etiology & clinical fetures.
09- Karya karana relation between vyadhis and doshas. Dohasa lakshana and Vyadhi lakshana.
10- Nanatmajatwa Samanyajatwa of Vyadhis.
11- Vyadhiashraya.
12- Classification of diseases :-
According to Agantuja, Shareera, Manasika, Sahaja type.

According to Adibalapravritta Bheda type.

According to Anubandha - Anubandhya type.

According to Swatantra - Paratantra type etc.

13- Nidanarthakaratwa and Vyadhhi Shankartwa of roga.
14- Ashtamahagada.
15- Principles of Roga and Rogi Pariksha.
16- Methods of Rogi Pariksha.
17- Different priksha according to- Pratyaksha, Anumana, Aaptopadesha.
18- Panchavidha and Shadvidha rogi pariksha.
19- Trividha pariksha (Darshana, Sparshana, Prashna).
20- Ashtavidha Rogi Pariksha (Nadi, Mutra etc.).
21- Dashavidha Rogi Pariksha (Prakriti, Vikriti etc.).
22- Trayodasha stroto pariksha with shadanga pariksha.
23- Definition and importance of Vikriti Vijnan.
24- Speciality of Ayurvedic Vikriti Vijnana.
25- Derangement of dosha - Dhatu-malas.
26- Dosha- dushya samurchchhana.
27- Classification of vikriti according to prakriti samasamaveta & vikriti vishama samaveta.
28- Conceptual clarification of the principle "Rogah sarve api mandagnou" Physiochemical properties of 'Ama' and it's role in pathogenesis of diseases.
29- Features of sama & Nirama Doshas.

30- Features of sama & Nirama Dushya.
31- Features of sama & Nirama Malas.
32- Knowledge of oja & Immunity (Vyadhi kshamatwa).
33- Disorders of Oja (Oja, vyapat, Oja Visransa, Oja kshaya).
34- Concept of 'Panchanidana' and its importance.
35- Feature and classification of etiology (HETU).
36- Features and importance of prodromal symptom (Purvarupa) and its samanya and Vishesa Bheda.
37- Features of Rupa, its importance, Synoyms and classification.
38- Features of Upashaya & Anupashaya, Its importance and classification.
39- Features of Samprapti, its importance and classification.
40- Knowledge of Avarana & Ashayapakarsha.
41- Features of Upadrava.
42- Knowledge of Arista Vigyana.
43- Determination of Sadhya - Asadhyata of disease.
44- Knowledge of beej and beeja dhushti and their disorder.
45- General introduction and pathology of following diseases.
(a) Shotha

(b) Shopha

(c) Kotha

(d) Apajanana

(e) Puti utpadana (Putrification)

(f) Rakta skandana (Blood coagulation)

(g) Pravahagata rakta skandana (Thrombosis)

(h) Jara Janya Vyadhi (Common senile disorders, general hypertrophies- Tumors)

46- Knowledge of Nisrotasa Granthis (Endocrine glands) & their diseases (Metabolic disorders).
47- Paryavarana Pradoshaja Vikara (diseases due to environment pollution).
48- Janapadodhvana Vyadhi (Endemic & Epidemic diseases).
49- Knowledge of Samsargaja and Oupasargika roga (communicable & infectious diseases).
50- Introduction of different Roganu (micro organisms) & their importance in pathogenesis of diseases.
51- Basic knowledge of following labortory procedures & their utility.
(a) X-Ray

(b) Ultra Sonography

(c) E.C.G.

(d) E.E.G.

(e) Bio-chemical investigations.

(f) Microbiological Investigations.

52- Study of following diseases of different sotasas in details -

1. Diseases of Manovaha Srotasa : Bhrama - Vibhrama - Mada - Murchha - Sanyasa, Apasmara - Unmada- Atatwabhinivesha etc.
2. Diseaseas of Vatavaha Srotasa : Akshepda - Apatanaka - Ardita - Pakshaghata - Gridhrasi etc.
3. Diseases of Annavaha Srotasa : Agnimandya - Ajirna - Aruchi - Chhardi - Visuchuika - Vilambika - anaha - Adhmana, Atopa - Amlapitta - Parinama shoola- Shoola - Grahani - Sangrahani - Udara roga etc.
4. Diseases of Udaka Vaha Srotasa - Trishna, Daha, Jalalpata, Jalakshaya etc.
5. Diseases of Rasa Vaha Srotasa :- Jwar-Jwar bheda, Rasa Ksaya.
6. Disease of Rakta Vaha Srotasa - e.g. Pandu - Kamala - Kumbha kamala - Halimaka - Raktapitta - Vatarakta - krostukashirsha - Shitapitta- Udarada - Kotha - Shitala - Masurika - Romantika - Yakrit vikara - Pleeha vikara, Snayuka - Shlipada - Rata Bharadhikya - Nyuna Rakta Bhara - Rakta kana vikruti (Disease of blood cells).

53- Detailed study of the disease of following Srotasas -

1. Diseases of Pranavaha srotasa - e.g. Swara - bheda - kasa - Shwasa - Hikka - Rajyakshma - Hridroga - hritshula - Hrita visphara (Cardiomegaly) - hridayghata (Cardic arrest) - Urakshata- Urastoya etc.
2. Diseases of Mutravaha srotasa - e.g. Mutrakrichhra - Mutraghata - Ushnavata - Ashmari - Phiranga - Upadansha - Granthi Vridhdi etc.
3. Diseases of Pruishavaha srotasa : e.g. Atisara - Pravahika - Vibandha - Arsha - Bhagandara - Krimi etc.
4. Diseases of Mamsavaha srotasa ; e.g. Shosha - Granthi - Mamsarbuda etc.
5. Diseases of Medovaha srotasa ; e.g. Sthoulya - Karshya - Prameha - Madhumeha etc.
6. Diseases of Asthivaha srotasa; e.g. Sandhivta - Manyagraha - Katigraha - Trikagraha Asthikshaya etc.
7. Diseases of Twaka (Skin) : e.g. Kustha, Visarpa, Kaksha (Dushta charma) Vicharchika, Kandu, Pama (Khasara) etc.
8. Jivatiktihinata (vitamin deficiencye), other Vyadhi Kshamata - Janita Roga (immunilogical disorders) due to hyper and hypo activity, AIDS etc.
9. Upasargajanya Vyadhis (Communicable diseases). **(07 Marks)**

(11) AGAD TAMTRA VYAVAHARA

AYURVEDA AND VIDHI-VAIDYAKA

Derivation of Agada tantra, definition-origin-actions-types-examination of Visha. Symptoms of Vishdata, symptoms of poisonous food, Shankavish and Vishkanya. Use of Visha and their remedy in wars during ancient times. Symptoms of upvisha, dushivisha, Garavisha. Ten features of Visha. Properties of Visha. Difference between and oja properties. Visha-Vega, Vegantara, Vegalashaya and their treatment. Examination of different Sthavara Visha, Kritrima Visha according to their laksanas and gunas. General principles of treatment of Visha,Symptoms and treatment of Madyavisha, Jangamvish-Sarpavisha, Vrishchika Visha, Lutavisha, Mushakavisha and Alarka Visha.

Description of Mineral poisons (parada, naga, Vanga, Giripashan, Tantra etc). Ashara Visha-description, Virudha drvya sevana. General treatment of Aaharvisha. Features seen during Postnorten. Vyavhar- Ayurveda, Courts and the descriptions related to them. Police inquest. Oath, Medical evidence, Medical Certificate, dying declaration. Age elaboration, its determination. Death and its medical legal aspects, Modes and signs of death. Rigor Mortis, determination times of death. Type of injury, medicolegal aspects and examination of death. Sexual offences and un-natural sexual offences. Abortion, Infanticide, Impotence, Sterlity, Medico-legal aspects of Virginity. Insavity and its medicolegal aspects. Duties of Physician, Conduct, rules and regulations, professional rights and condifentiality. Elaborate-Dharma, Artha, Kama, Moksha- utmost objectives of Ayurveda. Adharama-responsible for all disorders. Different types of sins attributes to Physical, Verbal and mental activites. **(07 Marks)**

(12) KAYACHIKITSA

01- Derivation, definitions & synonyms of KAYA-CHIKITSA.
02- Doshatmak importance of 'Kriyakala' and its management. Vyadhikshamatva. Sahayaka-Anga of Chikitsa.
03- Management of increased and defficient dosha, dhatu, mala and oja. Different principles of Treatment.
04- Dvividha & Sadavidha upakarma.
05- Treatment and pathogenesis of Jawara according to Charaka
06- Ayurvedic management and Samprapti of different types of Jawara.
07- Ayurvedic management and Samprapti ghataka of different diseases as per National Health Programme according to WHO.
08- General Principles of different systems of medicine.
09- Principles of treatment and management of the diseases of Annavaha Srotasa, Mutravaha Srotasa, Pranavaha Srotasa Raktavaha Srotasa, Rasavaha Srotasa, Medovaha Srotasa, Twakagataroga, Santarpana & Apatarpana, Sexually transmited diseases, Vata Vyadhis.
10- Management of different diseases of Endocrine glands.
11- Disease producing factors related to Genetical, Environmental, Immunity and physician induced factors. Dosha prabhara, Paramarsha. Food poisoning. Poisoning induced by heavy metals. Diseases caused by Heat and Cold Exposure. Travelling induced diseases. Diseases caused by environmental changes and Insect bite. Immune disorders. Serum disorders. Drug allergy. Iatrogenic disorders.
12- Kshudra Rogas.
13- Manasa Roga.
14- Senile disorders.
15- Emergency diseases.
16- Shodhan Karma – Poorvakarma.
17- Pradhana Karma (vaman, virechan, basti, sirovirachan)
18- Paschat Karma (samsharjana krama)
19- Rasayana
20- Vajikarana **(07 Marks)**

(13) SHALYA TANTRA

01- Concept of Dhanavantari, Sushruta. Surgical Ethics.
02- Nija and Agantuja diseases. Infection and Sterlization. O.T design & management.
03- Yantra, Upayantra, Shashtra, Anushashastra.
04- Pichu, Plota, Kavalika, Shodhan, Ropana dravya, Yogya Vidhi and Vishikhanu pravesha vidhi.
05- Specificity of Rakta in Shalya Tantra. Haemostasis. Blood grouping and Transfusion.
06- Shringa- Jalouka – Alabu in Shalya Tantra.
07- Shalya Karma, Sandhana Karma.
08- Anaesthesia.
09- X-Ray, Sonography, CAT Scan, MRI etc.
10- Role of Shalya Tantra in Medical Jurisprudence. Duty of Surgeon. Surgical conduct.
11- Vrana-Vrana Shotha Examination.
12- Agantuja Vrana/Saddyo-Vrana.
13- Manasa Vikara. Snayu Vikara. Tvaga Vikara. Dhamani Vikara. Sira Vikara. Manya Vikara.
14- Fractures. Joint dislocation. Joint disorders.
15- Chest disorders.
16- Abdominal disorders. Oesophagus disorders, Gastric disorders. Small Intestinal disorders. Large Intestinal disorders. Appendicitis. Anal disorders. Congenital Anal diseases. Liver disorders. Gallbladder disorders. Pancreatic disorders. Spleen disorders. Hernia.
17- Renal disorders. Ureter disorders, Urinary bladder-disorders. Penile disorders. Disorders of Testis.
18- Kshudra Rogas. **(07 Marks)**

(14) SHALAKYA TANTRA

01- Netra Sharira. Netra Roga.
02- Shiro Roga
03- Karna Roga
04- Nasa Roga
05- Mukha Roga, Ostha Roga, Danta Roga, Danta-mulagata Roga, Jihvagata Roga, Talu Roga, Kanthagata Roga, Sarvasara Mukhapaka, Sandhana Karma, Lalasravi Granthijanya Roga.
06- Commonly used Instruments.
07- Kriya Kalpa **(07 Marks)**

(15) PRASUTI TANTRA & STRI ROGA

01- Description of Prasuti Tantra. Stri sharira Vigyana, Mensturation, Foetal description, Garbhini Vigyan, Major diseases of pregnant Women, Science of Labour, Disorders of Labour, Sutika Vigyana, Sutika Roga.
02- Rakta Vidradhi
03- Stana- Stanya Vigyana
04- Maternal & Child Health Care
05- Family Planning
06- Congenital deformities of female genitalia. Amenorrhoea, Hypomennorhoea, Dysmennorhoea, Leucorrhoea, Prolapse of female genitalia, Jananganga Vidradhi, Granthi, Arbuda.
07- Infertility.
08- Breast Cyst and Tumor.
09- Panchkarma in Various diseases.
10- Surgical Procedures in induction of abortion. Episiotomy, Caesarean Section. Suturing of Cervix-Vagina-Perinial tear during labour. Induction of Labour. Dilation and Cauterization of Cervix. Prolapse of Uterus and Cervix and its management. Expulsion of Polyp-Cyst-Tumor of genital organs and Cauterization.
11- Surgical Procedures, Complications of Surgery
12- Family Planning. **(07 Marks)**

(16) KAUMARBHRITYA

01- Kaumarbharitya Introduction. Care of newborn child, Neonate. Kumaragara, Cutting of umbilical Cord. Cleaning of Vernix Caseosa, Care of fullterm-preterm- postterm. Examination of newborn. Examination of age, measures of protection, feeding of newborn. Lehana , Swarna prashana.
02- Breast milk, Examination of nurse. Stanya sampada.
03- Classification of age. Specific diet according to age. General care of Children. Room-play ground-toys of children. Growth and development of child. Sanskars.
04- Dentition. Teeth care and related diseases.
05- Examination of children's diseases. Drug dosages according to age.
06- Child psychology. General examination of mental function. Motor and Sensory function.
07- Balarasayana, Immunity, Immunization. Child Health Care and National Programmes RCH.
08- Community children health problems, Nutritional problems.
09- Resuscitation of new born. Diagnostic methods in pediatrics. General Principles of treatment. Panchkarma. Birth injuries, Asphyxia, Aspiration pneumonia, Fractures etc.
10- Congenital disorders. Hereditary diseases. Genetic disorders. Neonatal disorders. Milk allergy disorders. Malnutrition disorder. Acquired diseases. General diseases in children.
11- Behavior disorders of children.
12- Drug abuse.
13- Dehydration.
14- Convulsions. **(07 Marks)**

अभ्यर्थियों के प्रवेश पत्र, परीक्षा तिथि एवं परीक्षा केन्द्र के सम्बन्ध में सूचना ससमय विभिन्न हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों द्वारा एवं आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी जायेगी।

(एस0एन0 पाण्डेय)

सचिव